दो दिल

विकाश साह

दो दिल

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-32-6

Price: ₹ 190.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

दो दिल

विकाश साह

उस ईश्वर के लिए
जिन्होंने हमें अनमोल ज़िन्दगी दी!

इश्क पर जोर नहीं, है यह वह आतिश ''ग़ालिब''
कि लगाए न लगे और बुझाए न बुझे!!

– ''मिर्ज़ा ग़ालिब''

दो शब्द

मुझे खुशी हो रही है कि, जिन कविताओं को मैंने अपने बंद डायरी के पन्नों में कैद कर रखा था, आज वे कविताएँ आजाद है। वो शब्द, वो भावनाएँ और मेरे दिल का हर एक कोना आजाद है, आपके हाथों में। आज जब ये मौका मिला है, आप तक मेरी बात पहुँचाने का, तो मैं रुकूँगा नहीं। मेरा मानना है कि, प्यार एक बार नहीं सौ बार हो सकता है, और जरूरी नहीं कि हर बार वो एक से ही हो। प्यार तब तक हो सकता है, जब तक कि हमें कोई हमसफर ना मिल जाये। जब तक कि हमें हमारे जैसा ही एक और दिल ना मिल जाये और जब तक कि हमें कोई ऐसा ना मिले, जिसके बिना ज़िन्दगी अधूरी लगे, तब तक प्यार हो सकता है।

मेरी कविता ''दो दिल'' कभी पूरी नहीं होती, अगर कवि अभिजीत और यशपाल सिंह जी की कविताओं ने मुझे प्रेरित ना किया होता। साथ ही मैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ मेरे मित्र सोनू मिश्रा और सुमन यादव का भी, जिन्होंने हर मोड़ पे मेरा साथ दिया। और आज शायद मैं भी अधूरा होता, अगर मेरी ज़िंदगी में एक दोस्त जैसी बहन ''हिना'' नहीं होती।

– विकाश साह

लेखक के बारे में

विकाश साह का जन्म 9 मई,1995 को लीची के शहर मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ। शुरुआती शिक्षा इन्होंने केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरपुर से ली। चूँकि पिता आर्मी में थे, तो ये भी आर्मी के जीवन से काफी प्रभावित हुए और फिर इसलिए इन्होंने मिलिट्री स्कूल, धौलपुर (राजस्थान) से 12वीं तक की शिक्षा प्राप्त की। इसी दौरान इनका झुकाव कविताओं और ग़ज़लों की तरफ हुआ। मिर्ज़ा गालिब और रूमी को पढ़ते हुए इन्होंने भी अपनी कलम चलानी शुरू कर दी।

विकाश साह, अभी पूसा इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं। ''दो दिल'' इनकी पहली कविता संग्रह है।

पुस्तक के बारे में

सीता, राम के बिना, राधा, श्याम के बिना और हीर, राँझा के बिना, सारे एक–दूजे के बिना अधूरे हैं। अकेला दिल कभी पूरा नहीं होता। हमारे दिल को भी एक और दिल की जरूरत होती है। हमें मोहब्बत तो हमेशा एक से ही होती है, पर ये जरूरी नहीं है कि वो हमें पहली बार में ही मिल जाए, ये भी जरूरी नहीं है कि पहला प्यार ही सच्चा हो। उस दूसरे दिल के लिए हमें अपनी आँखें और बाहें, हमेशा खुली रखनी होती है। वो कभी भी आ सकता है, कहीं भी। और जैसा फिल्मों में दिखाया जाता है, हवाएँ बहने लगती है, और बारिशें होने लगती है, जब सच्चा प्यार होता है। जरूरी नहीं हैं कि असल जिंदगी में भी ये सब हो।

भूमिका

भूमिका लिखना किताब लिखने से ज़्यादा मुश्किल काम है, उसपर भी कविताओं के लिए। मतलब आपको एक बड़ी ज़िम्मेदारी दी गई है।

कविता क्या है और इसकी परिभाषा क्या होनी चाहिए? इस सवाल को लेकर साहित्यकारों की बिरादरी आजतक एक मत नहीं हो पाई है। तुकांत, अतुकांत, रबड़ छंद और न जाने किन–किन प्रकारों में बांटा गया है इसे। इसके इतने भेद हैं कि लिखने वाला हर वो व्यक्ति जो पहली बार लिख रहा है, समझ ही नहीं पाता कि उसने जो लिखा वो कविता ही है।

दरअसल इस क्षेत्र को इतना कॉप्लिकेटेड हमने ही बनाया है। कहानियों के साथ ऐसी बात नहीं, पर जब हम बोलते हैं कि मैंने एक कविता लिखी है, तो सामने वाले के दिमाग में गीत या ग़ज़ल का फोल्डर खुल जाता है। उसके लिए कविता का मतलब बस यही है। आम मन यह सोच ही नहीं पाता कि गर्म तवे के ऊपर पड़ने वाली पानी की बूँद और उसकी छन–छनाहट भी कविता हो सकती है, इसे समझता है तो कवि का हृदय। इसलिए कविताओं को समझ पाना तब तक मुश्किल है, जब तक हम उन भावनाओं को न समझे, जिनमें कविता लिखी गई है।

कविता आगे बढ़ते हुए एक माहौल बनाती है और हम उस माहौल में जितना अधिक घुलेंगे, वो हमें उतना ही आनंदित करेंगी और तब समझ में आएगा –

''कॉलेज के गेट पे'' किसी को ढूँढने का दर्द, किसी के सामने होने का एहसास और उसके न मिलने पर दिल का दर्द और कवि का ''अश्कों'' में डूब जाना। विकाश साह एक ऊर्जावान और संभावनाशील कवि हैं। आप सभी के स्नेह और आशीर्वाद की बदौलत वो लिखते–लिखते

आपके मन की बात भी लिखने लगे, ईश्वर से ऐसी कामना करता हूँ। **"दो दिल"** के लिए ढेरों शुभकामनाएँ।

– अभिजीत

अनुक्रम

क्र.	कविता	पृष्ठ क्र.
01	साह–ए–दिल	01
02	कॉलेज के गेट पर	02
03	अगर तू सामने होती	05
04	गुस्ताख़ियाँ	06
05	धीमी–धीमी सी आवाज़ में	07
06	तेरी जुल्फें	08
07	क्या होता	09
08	तेरी चाहत का असर	10
09	ये हवाएँ, ये फिज़ाएँ	12
10	रुक जाती तू अगर	13
11	तुझको मैं क्या बताऊँ	14
12	इश्क	15
13	प्यार खेल है	16
14	पहला प्यार	17
15	मेरा चाँद	19
16	तुम्हारे घर के सामने	20
17	मैं क्यों नहीं आया	21
18	दो लफ़्ज	22
19	तू अकेले क्यों गयी?	23
20	ये कैसी दीवानगी है	24
21	दर्द–ए–दिल	25
22	अनोखा प्यार	27
23	कभी ना कहा तुझसे	28
24	ख़फा क्यों है?	29
25	सारी रात	31
26	ज़िंदगी के आसमाँ	32
27	अधूरापन	33
28	अश्क	34
29	क्या लिखूँ ?	35

30	तेरे नाम पे ज़िन्दगी वार दूँ	36
31	तू ही नज़र आये	37
32	आज ना जाने क्यों ऐसा लगा	38
33	कुछ अपने बने, कुछ बेगाने	39
34	हम और वो	40
35	ज़िंदगी के दो पल	41
36	तुम पास मेरे कब आओगे	42
37	मैं बस तुम्हारा हूँ	43
38	याद आने लगा	44
39	वो आँखें, वो मुस्कान	45
40	वही खुदा	46
41	कैसा लगता है	47
42	कोई होता अपना	48
43	इन आँसुओं को एक सहारा चाहिए	49
44	ना	51
45	ऐ वर्षा! तुम यूँ न आया करो	52
46	क्यों मुझे बेवफ़ा बना दिया	53
47	काश मेरा दिल ऐसा ना होता	54
48	ऐसा क्यों बनाया?	56
49	कभी–कभी	57
50	फरेबी बना देता	58
51	मन–पँछी	59
52	सपने	61
53	आज मुझसे ना जाने क्या ख़ता हुई	63
54	बस मौत	65

साह – ए – दिल

आज फिर दिल में एक भँवर उठा है,
साह-ए-दिल मचल उठा है,
जब वो सामने की खिड़की पे आयी,
दिल ये आह-आह करके धड़क उठा है।

झुकी-झुकी सी नज़रें उसकी,
जैसे है तीर चलाये,
साह-ए-दिल घायल हुआ,
खुद के जख़्मी दिल को सहलाये।

धीरे-धीरे नज़र मिली उनसे,
शरमा के वो पलट गयी,
मन में ये आस जागे,
प्यार की ज्वाला भड़क गयी।

देखता अब उसे 'साह'
हर घड़ी, हर पल, हर जगह
ख़्वाबों में अब वो ही आती,
ना जाने क्या हुआ है, तुझे ऐ 'साह ।।'

दो दिल

बढ़ती उम्र के साथ जहाँ शरीर का हर अंग एक बदलाव की ओर बढ़ता है, वहीं कहीं ना कहीं ये दिल इस बदलाव को स्वीकार नहीं करता है। प्रकृति के आगे बढ़ने के नियम को खंडन करते हुए और अपने बचपन को ना छोड़ते हुए ये नादान दिल, किसी खोज में निकल जाता है, किसी की तलाश में।

इतना ही नटखट, इतना ही चुलबुल, थोड़ा नाजुक, थोड़ा जिद्दी और बिल्कुल बेपरवाह अपनी ही तरह, शायद एक और दिल को तलाशता है। और उस दिल तक पहुँचने के लिए ये हमेशा मुस्कुराता नहीं है। कभी इसे रोना पड़ता है, तो कभी इसे ठहाकेदार हँसना भी पड़ता है। ये "दो दिल" की कविताएँ बस एक किस्सा है उस रंगीन सफर का और अपने ही जैसे एक और दिल को पाने का।

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-32-6
9 788119 927326